सिंह-नाद

रचयिता

श्री बृजकिशोर "नारायण"

प्रकाशक

श्री मथुराप्रसाद गुप्त
Cattle Suptt. Bettiah Estate
सलारी, चम्पारण, बिहार

प्रात: स्मरणीय पूज्यपाद

प० लक्ष्मीनारायण जी मिश्र

के कर कमलों मे सश्रद्धा

समर्पित

पूज्य गुरुवर !

क्या मै आपके महान् उपकारो से उऋण होने के लिए यह धृष्टता कर रहा हूँ ? कदापि नहीं। बल्कि यह तो आप के समक्ष एक वैसा ही बचपन हे जिसे करने मे मै पहले भी पीछे नही रहा हूँ।

फिर भी इस खिलवाड को ठुकराना आप से न हो सकेगा।

क्योंकि

मेरा मुझ को कुछ नही

जो कुछ है सो तोर।

तेरा तुझ को सौंपते

क्या लागत है मोर।।

आपका अयोग्य

शिष्य

बृज किशोर

परिचय

'सिंह-नाद' के रचयिता श्री बृजकिशोर 'नारायण' का साहित्य-जगत का परिचय देने का श्रेय मुझे मिल रहा है। इनके हृदय मे अदम्य राष्ट्र-प्रेम है और इसी प्रेम ने इन्हे कवि बनाया है।

इस रचना मे कवि के रूप मे शायद साहित्यिक इन्हें ऊँचा स्थान न दे सकें, किन्तु मैं तो भावनाओं का आदर करता हूँ, और पाठको से भी भावनाओं की सरिता मे स्नान करने का अनुरोध करता हूं।

'सिंह–नाद' का जामा यद्यपि पुराना है। लेकिन उसकी प्रेरणा और स्फूर्ति नवीन है। जीर्ण जामे मे नव युग की आत्मा को 'नारायण' ने भर दिया है। यह भी सच है कि ये इनके प्रारम्भिक बोल हैं। इस धुँधलेपन के पीछे इनका उज्ज्वल भविष्य मैं देख रहा हूँ। 'नारायण' को एक बलवान आत्मा प्राप्त है। यही इनकी सब से बड़ी पूँजी है।

'सिंह–नाद' भारत के सोते हुए बल को जगावे यही मेरी कामना है।

—हरिकृष्ण 'प्रेमी'

कुछ मेरी भी

सहृदय पाठक ! यह "नाद" तो आपके सम्मुख शायद सतसई के रूप में ही आता । परन्तु कतिपय बाधाओं और परेशानियों से विवश हो कर इसको अधूरे रूप मे ही आपको परोस रहा हूँ । फिर भी शायद कुछ अङ्गों की पूर्ति हो जाय। मेरी यह रचना अन्य विद्वान् और प्रतिभाशाली कविवरो के चरण-रज से भी तुलना के योग्य नही और न मैने इस विचार से इस ग्रन्थ का निर्माण ही किया है।

गत् वर्ष हृदय के अन्दर एक आकस्मिक-क्रांति हुई। लपटें उठीं । ज्वालामुखी का मुँह खुल पड़ा और उसके साथ ही यह 'नाद' भी बाहर निकल आया । इसमें किसी का भी दोष नहीं। यदि है तो उसी आत्मिक-प्रेरणा का जिसने अज्ञात ही यह कार्य करा डाला।

अतएव इसके अन्तर्गत आने वाली प्राकृतिक त्रुटियो के लिए क्षमा ही कर दीजिएगा। इसका प्रायश्चित मैं शीघ्र ही अपनी दूसरी रचना "झंझा-गान" के अन्दर करने की चेष्टा करूंगा।

अन्त मे पूज्यवर पितृवत् बाबू सरयूप्रसाद जी वर्मा तथा अनन्य बन्धुवर श्री "प्रेमी" जी को सहस्त्रशः धन्यवाद देता हूँ जिनकी अपार कृपा से ही यह मेरा कवि-कर्म समाप्त हो सका है।

कविता-कुटीर
सिविल लाइन्स गुजरावाला
२५ अगस्त १६४०

विनीत
'नारायण'

प्रार्थना

न्यायी, परम कृपालु, विभो,

हम अनाथ के नाथ।

करुणा कर करुणा-अयन,

सिर ऊपर दे हाथ।

सर्वेश्वर, अशरण-शरण,

पतित-उधारन नाम।

हम गुलाम हा! फलपने,

हो कर अति बदनाम

सिंहनाद

बँधे गुलामी में, प्रभो,
जग को कर स्वाधीन।
अखिल विश्व शम् मग्न हो
विषम पयोद विलीन।

पुण्य-भूमि-भारत अहा!
हो परतन्त्र मलीन,
दीन-बन्धु तव चरण में,
लिपटी बन कर दीन।

"त्राहि-त्राहि" कर बिलखती,
भारत मात-गुलाम।
अगम-वेदना उर धरे,
करती तुम्हें प्रणाम।

———

लोकमान्य तिलक

लोक मान्य, तव सुयश से

कौन अपरिचित आज।

राजनीति पांडित्य से

विस्मित आंगल राज।

तिलक, देश के तिलक तुम

तनिक न तिलके वीर।

तिल सम तुम ने झेल ली

[illegible] तीर।

धन्य कर्म-योगी प्रवर
स्वतन्त्रता—शुभ—दूत ।
देश-भक्त अनुपम तिलक-
गंगाधर अवधूत

"जन्म-सिद्ध अधिकार है
स्वतन्त्रता सुख-मूल ।"
उत्तम पथ दर्शित किया
गए जिसे थे भूल।

भिक्षा से मिलनी नही
आज़ादी—कल—हीर ।
योग्य बना निज को तुरत
प्राप्त करें सब वीर।

रच "रहस्य" अनुपम विशद
हम को दिया प्रकाश।
आच्छादित क्षेपाभ्र से
था यह देशाकाश ।

नि [illegible] ना द

तिलक, तुम्हारा तेज तप
  तत्परता औ त्याग ।
    त्रिभुवन को तरसा दिया,
      धन्य, देश—सिरताज ।

थकित-पथिक सम विवश बन
  पड़ा भारत-देश ।
    निज शिक्षा-पीयूष दे
      प्राण किया अवशेष ।

कला-भवन भारत बना
  त्यागी तिलक महान ।
    निज निर्णय निज नीति से
      रची ऐक्य दृढ़ तान ।

देशबन्धु चितरञ्जन दास

चितरञ्जन, चित रञ्ज नही
हुआ तुम्हारा वीर।
धनद-भूति सम विभव को
तजते किञ्चित धीर।

देशबन्धु, तुम बन्धु ही
नही, देश के दास।
थे भारत माँ के महत्
विमल--हृदय--उच्छ्वास।

सिंहनाद

पराधीनता मे देखी
माता का अवलोक।
व्यथित हुआ तेरा हृदय
जो था सतताशोक॥

निज प्रतिभा, चातुर्य से
किया देश का मान।
दूर हटे परतन्त्रता
था तेरा अरमान।

तन, मन, धन का निधन कर
हे चितरञ्जन दास।
मातृ-भूमि हित मर मिटे
कर अमरत्व प्रकाश।

———

पं० मोती लाल नेहरू

धन्य, दुःखी माँ के सुखद
गौरव मोतीलाल ।
निर्धन भारत के धनद
मञ्जुल मोती, लाल ।

जन-पुङ्गव पटु तर्क में
निस्पृहता - अवतार ।
दिप्त, कान्ति तव रूप की
सका न कोई धार ।

सिंहनाद

बन्दी-गृह 'आनन्द' था
'भवन' त्याग पश्चात् ।
भङ्ग नहीं किञ्चित हुआ
देश - भक्ति - प्रतिज्ञात ।

नर-पंचानन धन्य तुम
धन्य, धन्य, परिवार ।
प्रतिजन तत्पर था सदा
करता देशोद्धार ।

जयति वृद्ध-युवक रथी
आजादी रण - वीर ।
निर्भय, निष्कर, अग्रसर
थे तुम सन्तत धीर ।

हो न तुम्हारे निधन से
भारत माता व्यग्र ।
पुत्र-जवाहर दे हमें
हुए जगत से अग्र ।

ला० लाजपत राय

लाज रखी पत भी रखी
राय सु दी बहुमूल्य ।
पंचानन-पञ्जाब जय
कौन तुम्हारे तुल्य ।

दृढ़-कर्मी, वक्ता महत्
जोशीले सरदार ।
मिस मेयो-मत्सर-मथन
ओज—रूप—साकार ॥

सिंहनाद

है विदेश भी जानता
साहस तिष्योदात्त ।
हा ! तव मृति कारण बना
आंगल दण्डाघात ।

देश-कोट-प्राचीर तुम
व्याकुल थे दिन रात ।
हो विनष्ट कैसे महा—
परवशता - व्याघात ।

लाला, पाला आपने
कर काला अरि-आस्य
दुखित - मात-आधार-शिशु
के तुम थे मृदु-हास्य ।

नाम 'केसरी' श्रवण से
तुम होते झट याद ।
रिपु-गज-हृत् है काँपता
सुनते हरि-जय-नाद ।

———

डाक्टर अन्सारी

जय अन्सारी डाक्टर
हा, अब रहे न आप ।
विस्मय है तव मरण पर
अरि - मित करें विलाप ।

व्यथा-विकट सहते रहे
देश-भक्ति - शुभ - हेतु ।
जयति, वीरवर अमर हो
जब तक कीर्ति-सुसेतु ।

सिंहनाद

निरे चिकित्सक रोग के
आप नहीं थे वीर।
पराधीनता - भूत के
थे तुम निरुपम पीर।

हिन्दू- मुस्लिम एकता
के थे तुम आधार।
आजादी, के धर्म का
तुमने किया प्रचार।

कमला नेहरू

कमला, कमला लाल की
थी भारत अभिमान ।
आज़ादी-रण-शक्ति अब
तुम बिन सब तिय म्लान ।

श्वसुर आर्य बन्दी बने
जब सत्याग्रह काल ।
कमले, तुमने कार्य सब
तुरत लिया सम्भाल ।

सिंहनाद

विमला, सती, मनस्विनी
नारि - शिरोमणि धन्य ।
सर्वकला सम्पन्न थी
थी समता नही अन्य
सफल जवाहर भी हुए
पाकर तुम सी दार ।
शोक ! सङ्गिनी नहि रहीं
चिरकालिक, ले भार ।
निज पर्याय तनया रखी
कर भारत कल्याण ।
भारतीय ललना प्रभत्
का तुम विमल प्रमाण ।
खटक रहा रह रह अहा !
माँ, तेरा अवसान ।
पुनर्जन्म ले कर रखो
फिर भारत की शान ।

सि ह ना द

पुण्यश्लोका, आज तक
तेरा हमको शोक ।
देश-भक्ति उद्गाढ़ थी
नहि अवसाद स्तोक ।

कमले, अबले देश की
हो तुम सम जो आज ।
"मर्द" "वीर" नर को भला
लगे न क्यों फिर लाज ।

———

श्री अरविंद घोष

भारतमाता कर धरे
है प्रसन्न अरविन्द ।
तव यश सौरभ पर तपी
गूँजे भक्त-मिलिन्द ।
शत्रु - हृदय था दहलता
सुन कर तव निर्घोष ।
पर अब तप तेरा उन्हे
देता शम सन्तोष ।

सिंहनाद

ब्रह्मोत्पादक हो अरे
क्यों हो बने गुलाम !
सृष्टि बना स्वातन्त्र्य-मय
तप - राधा के श्याम ।

जननी सुनना चाहती
सिंह तुम्हारा नाद ।
निकल 'गुहा' से जगत् को
दो तुम शक्ति - प्रसाद ।

मदनमोहन मालवीय

मद न तुम्हें मोह न तुम्हें
मालवी - यजन - अग्र ।
आजादी रण मे चढ़े
देख देश अति व्यग्र ।

राष्ट्र - ईश ही तुम नही
आर्य - जाति के शान ।
हिंदू विश्व विद्यालय
तरनी तरिक महान् ।

सिंहनाद

वयोवृद्ध नेता तुम्हीं
अनुभव - रत्न - उद्यान ।
अपमानित भारत सदा
पाता तव सम्मान ।

बन विरक्त तुम कर रहे
विद्यालय - विस्तार ।
ब्रह्म-ज्ञान - मख के तुम्हीं
ब्रह्मा व्यास उदार ।

— —

महात्मा गांधी

धन्य, धन्य है लेखनी
धन्य धन्य कवि आज ।
तुच्छ तूलिका पर रहा
गांधी पूज्य विराज ।

सत्य-मूर्त्ति हरिश्चन्द्र सम
पुङ्गव भारत - भक्त ।
शत प्रणाम तव चरण में
करता देश अशक्त ।

सिंहनाद

शिथिल-प्रतीक्षक के प्रभो
दुर्बल के बल राम ।
गुदड़ी के गोमेद कल
श्रान्त - पान्थ - विश्राम ।

व्रत-धारण प्रावीण्य तव
दीन दुखी से प्यार ।
दीन बन्धु का बन रहा
तनु तन - तव आगार ।

सत्याग्रह सर्वस्व, हे
पराधीनता - काल ।
विश्व - वंद्य गांधी प्रवर
केशर भारत - भाल ।

सत्य अहिंसा युद्ध के
सच्चे सेनप वीर ।
हबशी प्रान्तर के महा-
रथी, शान्त, रणधीर ।

सिंहनाद

परिमल पूरित यश अहा
व्याप्त हुआ चहुँ ओर।
क्षेप-क्षपा का अन्त हो
स्वर्णिल हुआ सुभोर।

हरिजन के हरि सम तुम्हीं
हो रक्षक शुचि गण्य।
रघुवर सम पावन किया
देश — दण्डकारण्य।

कर्णधार कान्ग्रेस के
कर्मठ कर्मी आप।
देव, दिया वाकीलता
को ऋषि वन अभिशाप।

धूमिल भारत का मिहिर
देता जगत प्रकाश
रंकालय का नीलपल
सौख्य-सुधा का हास।

सत्य - अहिंसा - सुधा का
दिखलाया सुप्रभाव ।
कसक हृदय मे देश-प्रति
है अदम्य, अति चाव ।

पंचम जारज से मिले
धारण कर कौपीन ।
देख भूप विस्मित हुए
गाँधी को तन क्षीण ।

कर्मचन्द ! तुम चन्द ही
भारत - चातक हेत ।
मोहन ! "मों हन" कह रही
परवशता - गृह - रेत ।

धन्य लकुटिया है अहा
जादूगर की दण्ड ।
चरखा भी तो आपका
करता कार्य प्रचण्ड ।

सिंहनाद

धन्य लँगोटी औ' अजा
धन्य धन्य व्रत - मौन ।
यश-रवि से परिचित नहीं
आज भुवन में कौन ।

मृदु भाषी हे सत्यधन,
भारत - कर्म - अभिमान ।
है विमुग्ध अचला अखिल
सुन गुण-गण-कल-तान ।

जीवन नव जर्जर हुआ
रहते कारावास ।
पराधीनता दुःख महा
करती विश्व विनाश ।

सुसन्देश जग को दिया
हो अशस्त्र सब देश ।
विश्व-शान्ति व्यापक बने
मिटे क्लेष कटु लेश ।

सिंहनाद

जगतीतल मे सत्य का
है जब तक आभास ।
तब तक तू है पूज्यतम
हे गाँधी गुण-रास ।

तू असीम है सतत ही
रख कर सत्य असीम ।
तुच्छ लेखनी क्लान्त अब
हो अति तुच्छ ससीम ।

—

पं० जवहार लाल नेहरू

मोती का वंशज हुआ
अहा, जवाहर लाल ।
क्यों न दीप्त मुख मातु का
लाल सुशोभित भाल ।

स्वर्ण गात है धूसरित
भारत - राज कुमार ।
पर निशिदिन तव सुयश का
है सौरभ विस्तार ।

सिंहनाद

अम्बर थल औ नीर मे
दौड़ - धूप कर हाय ।
व्याकुल हो पर खिन्नता
सकी न तुम्हें दबाय ।

पराधीनता - असित हा
मुख से मिटे महान् ।
यत्न - शील हो तुम सदा
है प्रख्यात् जहान ।

त्याग विभव, आनन्द सब
हुए न जरा अशान्त
देश - प्रेम में भी भला
देश – भक्त क्या क्लान्त ।

कमला सी कमला नही
और पुत्र सम प्राण ।
उन के विन भी शान्त हो
करते माता - त्राण ।

भूप वास्तविक तुम प्रभो
कहते क्यों बेताज।
रहती सिर पर शुभ्र है
गाँधी टोपी आज।

चन्द्र-वदन गुणधाम तुम
हम सब भक्त चकोर।
भीम घटा बन तुम अगर
गरजो तो हम मोर।

भैरव के हूंकार तुम
हम त्रिशूल की नोक।
पराधीनता रोग के
वैद्य आप, हम जोंक।

अधम-गुलामी के निधन
तुम, हम रोग महान्।
आजादी के काम हम
तुम हो पावन-प्राण।

सिंहनाद

भारत है मेवाड़ सम
तुम हो प्रबल प्रताप।
विषम क्लेश सहते सदा
भक्ति न भूले आप।

भील राज, भामा सरिस
साथी सब सामन्त।
हो तत्पर रण मे करें
पराधीनता अन्त।

कहीं पुत्र मम "अमर" सम
बन जाए ना हाय।
धुँधला सा यह दीप भी
माता का बुझ जाय।

पुत्र हीन रहना भला
भला न पुत्र-गुलाम।
यह विचार तुम में सदा
था शायद अभिराम।

सिंहनाद

स्वर्णाक्षर इतिहास में
होगा तव शुभ नाम।
लो अभिलाषित वस्तु द्रुत
भले रहे विधि वाम।

चिर जीवित तुम को करे
ईश क्लेश हो दूर।
पराधीनता-पवि विषम
से हम चकना चूर।

श्री सुभास चन्द्र बोस

जय सुभास जय चन्द्र की
जय जय तेरी बोस।
भारत दुर्दिन पर अहो
है तव कल अनुक्रोश।

धन्य युवक अनुभव अयन
भारत - भाल - सुचन्द।
अग्रगामि-नायक अभय
जय प्रिय अर्क-अमन्द।

सिंह-नाद

युवक-नलिन-रविकर-निकर
रंक-राष्ट्र वर-ईश।
है विनम्र सम्मुख सदा
नव असंख्य जन शीश।

उच्च कमीश्नर पद तजा
बन आजादी - वीर।
तरी प्रवाहित नियति की
कर दी सरिता तीर।

द्रव्य लोभ द्रोही नहीं
हो इच्छुक स्वाधीन।
भला शेर-वंशज कभी
खाए तृण या मीन।

नजर-बन्द रहते सदा
आजादी अपराध।
दुर्बल हो, रोगी हुए
मिटी न मन की साध।

देश - गुलामी - यज्ञ - बलि
तुम दारुण करवाल।
पराधीनता - सृष्टि हित
तुम हो रुद्र कराल।

परवशता - तट - विटप के
उच्छृङ्खल नद आप।
दत्त - यज्ञ - दुख - दैन्य के
हो शंकर - अभिशाप।

मातृ - व्यथा साहाय्य हित
वधू न लाए शोक।
परिचर्या में मात की
होगा अर्द्धालोक।

शुष्क शीघ्र कर देश का
पराधीनता - पङ्क।
मातृ - भूमि उत्फुल्ल हो
तुम्हें बिठाए अङ्क।

सरदार पटेल

माता के 'वल्लभ' तुम्हीं
'भाई' अखिल सुदेश।
गांधी—दक्षिण कर तुम्हीं
जय सरदार सुवेश।

नाविक चतुर जहाज़ के
तुम सरदार पटेल।
फिर नैया औ' पुलिन का
क्यों न होय शुभ मेल।

सिंह-नाद

चकित देश उत्सर्ग पर
    तेरे आज महान् ।
        निरत हुए उद्धार हित
            देने यश-वरदान ।

सैनिक हित वर वीण तुम
    हिंसा से पर दूर ।
        तुम से जलती है सदा
            पराधीनता क्रूर ।

प्रभो, मनोरथ आपका
    हो अवश्य ही पूर्ण ।
        विद्युत् गति से मोदमय
            मङ्गल आए तूर्ण ।

मौलाना आज़ाद

जयति देश के अग्रसर
मौलाना आजाद ।
करो नष्ट तुम प्रथम ही
पारस्परिक प्रवाद ।

नाम विरद मिलते नही
आपस में, हो याद ।
अब मौलाना शीघ्र तुम
बनो सत्य आज़ाद ।

बापू के अर्द्धाङ्ग तुम
मातृ-भूमि सर्वाङ्ग ।
गत-वैभव के शेष धन
देश सुयश दीप्ताङ्ग ।

मुसलमान पीछे तथा
हो भारतीय पूर्व ।
मुस्लिम-कुल-भूषण, अहो,
है तव कार्य अपूर्व ।

शान्त, अभय बन कर सदा
इष्ट-सिद्धि में लीन ।
इस स्वरूप में आपको
शत प्रणाम अविछिन्न ।

देश-रत्न-राजेन्द्र प्रसाद

देश रत्न भारत सुखद
जय राजेन्द्र प्रसाद ।
तव यश से इस देश का
नष्ट हुआ अपवाद ।

भारत धन, निज सौख्य का
देश हेतु कर नाश ।
मातृ-भूमि का कर रहे
ख्याति विभव सुविकास ।

अन्धों की लाठी तुम्हीं
आजादी सोपान ।
डूब रहे इस देश के
तुम हो जीवन-यान ।

स्वास्थ्य सदा सन्तोष प्रद
रहे आप का भद्र ।
रोम रोम आशीष दे
भारत अमित दरिद्र ।

पुनः पुनः अवतीर्ण हो
करो सुशोभित देश ।
बन विषाद विष व्याधि का
दारुण दाहक क्लेश ।

——

श्री ख़ान अब्दुल गफ्फार ख़ां

जय अब्दुल गफ्फार खाँ
जय गांधी सरहद्द ।
सौम्य मूर्ति तव देखते
होते द्रोही रद्द ।

हिन्दू औ' इस्लाम में
हे असत्य संघात ।
युग्म व्यष्टि के ऐक्य तुम
द्वन्द्व – शर्वरी – प्रात ।

सिंह-नाद

भग्न-देश के कोट तुम
खुदाइ खिदमतगार ।
दुर्मन भारत के अहो
हितचिन्तक सुकुमार ।

दुर्हद तक में व्याप्त को
आज़ादी - प्रिय - शेर ।
सुर्ख-पोष कल कोक के
सौरभ सुरभित भोर ।

जग में चिरजीवित रहो
तुम इस्लामी शान ।
हो उज्वल आदर्श तव
भारत का अभिमान ।

श्रीमती सरोजनी नायडू

हिन्द-काकली नायडू
कवियित्री प्रख्यात ।
राष्ट्र-नायिका धन्य तुम
कीर्ति-दायिका मात ।

मातृ-भक्ति करती अगर
सदा सहित हो क्लेश ।
तो इसके मिस हो रहा
निज सेवा-उपदेश ।

धर्म कर्म औ' मर्म सब
आजादी ही शुद्ध ।
कविता कर इस विषय पर
करो क्रान्ति को क्रुद्ध ।

मातृ-जाति हो भ्रात को
देगी शीघ्रोत्थान ।
बन झाँसी रानी विकट
करो समर-प्रस्थान ।

सुठि सरोजिनी शुष्क क्यों
साश्रुलोचना हाय ।
स्वतन्त्रता-सप्राश्व बिन
कृश है कोमल काय ।

——

श्री एनी वेसैन्ट

कर्मयोगिनी आप थीं

गीता का ले सेन्ट ।

धन्य आपकी धारणा

अयि एनीवेसेन्ट ।

राष्ट्रनायिका बन उन्हें

दिया त्रीड़ से सीच ।

जो थे देश विदेश के

वने भाव रख नीच ।

माता कस्तूरा बाई

कस्तूरा बाई जयति
जय गाँधी अर्द्धाङ्ग ।
प्रसू जाति की कल कला
पति - प्रियता प्रणाङ्ग ।

आर्य - वधू आदर्श नव
देश - भक्ति विख्यात ।
निज पति सम तुम निरत हो
जन - सेवा मे मात ।

सिंह-नाद

वयोवृद्ध हो कर अभी
कठिन कार्य में लीन ।
राजकोट सत्याग्रही,
अम्बे, जयति प्रवीण ।

निठुर कैद के विषम दुख
तुमने सहे अपार ।
सुरभित कानन की तुम्ही
मनहर मलय बयार ।

हिन्द कीर्ति अविचल महा
रख तुम सी वर माय ।
बापू सह जीवित रहो
हो आजादी आय ।

———

मीरा बहन (मिस स्लेड)

मात पिता औ' देश निज
छोड़ सर्व सुख सैन !
भारत सेवा कर रही
जय जय मीरा बेन ।

सत्य स्नेह सौहार्द से
आ कर इतनी दूर ।
हो सन्तत प्रसन्न चित्त
त्याग जाति निज क्रूर

वीरों से

भूत, भविष्यत् के तथा,
अब के अनुपम भक्त ।
है अगणित गुण आपके,
कवि है अधिक अशक्त ।

भारत-वन के सिंह अभय,
ओ भारत के प्राण ।
अमर रहो तुम सूर्य तक,
देते गौरव दान

सिंह-नाद

शूर शहीदो ! जन तुम्हें
धन्य देश की मात।
मर कर भी तुम देश-हित,
गगन रहे मँडरात

तुम से आदृत मनुजता
तुम से जग का मान।
करो देश को मुक्त तुम
देकर निज बलिदान

— ——

स्वाधीनता

तभी आज स्वाधीनता,
सत्य सौख्य जग बीच ।
जभी असत्याधीनता,
लिपट गई बन मीच ।

निर्धन कभी अकाल को,
दुखी कभी भी क्लेश ।
इष्ट समझ लेगा नही,
हो चाहे वर वेष ।

सिंह-नाद

हाय, बुभुक्षित पर सदा
चिल्लायेगा "भूख।"
वस्त्र-हीन भिक्षुक रहे
या नीरस जन रूख।

क्रूर, कृपण दम्भी उसे
किन्तु कहेंगे "जल्प"
क्या दुर्बल का निविड़-दुख
है प्रभु अनुचित अल्प?

समदर्शी स्वाधीनता
सर्व - श्रेष्ठ - सम्मान।
है अभीष्ट इस देश की
औ' अतीत की बान।

युवक से

हो अखण्ड व्रत अब यही

वीर मरण पर्यन्त।

आजादी अंकस्थ हो

या हो जीवन अन्त।

गैरी बाल्डी बन तथा

बन वासिंगटन वीर।

युवती तू अब "जोन" बन

या लक्ष्मी रण-धीर

रूस, इटाली जर्मनी
ओ टर्की जापान।
स्वतन्त्रता - सरिता जहाँ
का है कलकल गान।

रे दुर्जय हो उठ खड़ा
कर अनुभव नित शौर्य।
देश विजय की शक्ति ले
चन्द्रगुप्त बन मौर्य।

क्यों रे तूँ कायर बना
शर्म शर्म रे तात।
जब तेरे कुल में हुए
बहुबल शिवा, प्रताप।

उठ निर्धन के लाल तूँ
कर दे जगती लाल।
लाले प्राणों के पड़े
तव तूँ माँ का लाल।

काल - कुण्ठ यमराज बन
दे बर्बर अपवाद।
भर अन्यायी जगत में
नाश ! नाश !! नभ - नाद।

उन्नत-सिर सन्नद्ध हो
कस कटि फेटा बाँध।
कर प्रयाण रण विकट मे
शस्त्र शीघ्र ले साध।

खण्ड खण्ड हो गिर पडें
रुण्ड मुण्ड उड़ जाँय।
पीठ दिखाना पर नहीं
गृद्ध भले ही खाँय।

यौवन मद से मत्त अय
अहे युवक सिरताज।
जाग जाग कुछ देख तू
देश - दास क्यों आज।

सिंह-नाद

बन भैरव कर विलय जग
ले त्रिशूल भय-जाल।
असुर दुष्ट समुदाय को
झपट नष्ट कर डाल।

शिरस्त्राण पर शिर सदा
वर्म सतत तन बीच।
अरुण सदा तव नयन में
हस्त रहें शर खींच।

पृष्ठ तूण औ ढाल मय
दसन धरे हय-बाग।
तुपक, शेल, बन्दूक बम
से दे रिपु-मुख दाग।

समर-भूमि में अमर बन
कमर तोड़ रिपु-जूट।
रथारूढ हो गगन से
बन घन-वल्ली टूट।

सिंह-नाद

भीम-मूर्ति-बन कुटिल प्रति
हर है अघहर मान।
क्रुद्ध रूप तव देख कर
झुके वीर गतिमान।

गरज मेघ सा युवक तूँ
कायरता को त्याग।
क्यों गजारि गरजे नहीं
छोड़ निन्द उठ जाग।

आजादी मख-अयन का
तूँ दृढ़तर आधार।
सावधान होकर युवक
कर माता उद्धार।

हाय, दशा क्या हो गई
रहते हुए गुलाम।
भाषा, भोजन, वेष से
करता तूँ संग्राम।

जीवन ममता त्याग दे
यह नश्वर रे ! गेह ।
पञ्च तत्त्व विरचित भला
होगा कैसा देह ।

रक्त-दान तेरा कभी
लायेगा अमिताभ ।
इसे प्रवाहित कर सदा
लख मां का शुचि-लाभ ।

माथ हथेली पर रखे
बलि वेदी को चूम ।
एक बार रण में कढ़े
मृति पर्यन्त न घूम ।

युवक जाति ने ही सदा
ली आजादी सद्य ।
अनुयायी हो आप भी
ले शुभाशीष इन अद्य ।

देख तुझे औ' अन्य को
हृत में होती पीर।
हाय, क्षीर जो था सदा
क्यों है दूषित नीर।

प्राग्य-पुत्र क्यों खिन्न हो
बन जल्दी विक्रान्त।
पिट जायेगा, यदि रहा
बना हुआ अब शान्त।

समय नहीं कि हाथ पर
हाथ धरे तू बैठ।
बन भीषण पटु तरुण तूं
मूँछ शान से ऐंठ।

आजादी हित मर मिटा
तो होगा तव नाम।
भावी सन्तति भी सदा
गाएगी गुण-ग्राम।

उठ, उठ अब है कार्य का
नहीं सोच का काल ।
क्या गुलाम कहलायगा ?
तुझ से यही सवाल ।

रुण्ड मुण्ड दौड़ें जभी
तब हृत् होगा शान्त ।
बिना तुम्हारे रक्त के
मात रहेगी क्लान्त ।

जहाँ जन्म तेरा हुआ
वही भूमि आधीन ।
धिक, धिक है शत वार रे
वन रे वन स्वाधीन ।

क्रान्ति क्रान्ति कह अग्रसर
हो रण मे हँस वीर ।
शान्ति शान्ति अब त्याग दे
शान्ति क्रान्ति का तीर ।

सिंह-नाद

विद्रोही रणभूमि में
रोये तुम को देख ।
कर कराल कटु कर्म को
मिटा शीघ्र विधि-लेख ।

राष्ट्र रक्त-रञ्जित बना
राजनीति कर रूढ़ ।
भिक्षा से स्वाधीनता
मिली कभी है मूढ़ ?

नव शोणित नव धमनियों
का क्यों शीतल लाल ?
खौल उठे, बन रुद्र तू
कर करनी विकराल ।

ले उपाधि अति उच्चतम
बना हुआ बेकार ।
पराधीनता बस तुझे
करती है बेज़ार ।

सिंह-नाद

कार्य,, कौन है जगत में
जिसे न करले शूर।
यौवन ने ही तो सदा
किया असम्भव दूर।

बने दीनता छोड सब
देश मुक्ति से पूर्ण।
बन अनुगामी मिश्र का
ले आजादी पूर्ण।

सादर विनय तरुण यही
त्याग देह औ' गेह।
ले आजादी या अभी
मिटा जगत से नेह।

वृद्ध से

वृद्ध, दण्ड ले दौड़ अब,
दौड़ दौड़ पितु वीर।
पिञ्जर से ही शत्रु का,
कर दे जीर्ण शरीर।

व्यसन त्याग निज नन्द का
सेनानी बन वृद्ध।
झुक जाये तव तेज से
ऐसा हो रण - सिद्ध

सिंह-नाद

अनुभव संचित से सदा
बता नीति तू कूट ।
पुत्र पौत्र तव शक्ति सह
ले रिपु को द्रुत लूट ।

कर प्रदीप्त नव वस्तु तू
सोच सोच कर वृढ़ ।
पा जाये बालक जभी
खोजे तत्व सुगूढ़ ।

तेरे ही बल पर सदा
निर्भर हैं तव पुत्र ।
जब थोथा तू होयगा
पुत्र जायगा कुत्र ।

हुक्का, गांजा त्याग अब
छोड़ शराब, अफीम ।
देख गुलामी की दशा
पी ले करुणा-नीम ।

सिंह-नाद

कुत्तों की ही भाँति क्या
तुझ को मौत पसन्द।
अरे जाग, ले लट्ठ अब
मर रण-बीच अमन्द।

तुझ पर दारोमदार है
वर को वृद्ध सँभाल।
तज दे अँधाधुन्ध को
मूर्ख-बुद्धि को टाल।

गीता पढ़ और सुत पढ़ा
बन जा शिक्षित पूर्व।
दे स्वतन्त्रता वश को
कर दे उग्र अपूर्व।

बन प्रचण्ड दिखला अभी
तू अनुपम है वृद्ध।
तेरे ही कारण सदा।
कार्य रहेंगे सिद्ध।

———

भारत माता स्तुति

सिंह-वाहिनी, केतु-त्रय—
रग लिए निज हाथ।
गदा धारिणी, गरज कर
रिपु को कर बिन माथ।

गीता कर ले, देश को
कर दे अर्जुन ग्राम
स्वाधिकार लौं धीर यत्न
मरण भीति ना भ्रात।

सिंह-नाद

विप्लव-कारिणी, शूलिनी
कर दुर्जन संहार।
निर्बल-दुख चीत्कार से
कर दे हाहाकार।

कमल धारिणी, कमल प्रति
निज शासन ही अर्क।
स्वतन्त्रता वर-यज्ञ का
कमल चिह्न मधुपर्क।

पराधीनता-पुंश्चली
का फैला दृढ़-जाल।
कर माता, उद्धार अब
बन पुर-बामा काल।

———

मातृ-जाति से

मातृ-जाति, तव सर्ग से
अवगत है संसार ।
तेरे ऊपर ही रहा
है अपत्य गुरु - भार ।

जब तक तू ही मलिन है
होंगे हम क्यों शुद्ध ।
गान गायेगा लोक, है
अगर कण्ठ ही रुद्ध ।

शिक्षित जब तक तूँ नही
हम होंगे धी हीन ।
पीला तन हो मात का
क्यों न बाल हो क्षीन ।

तव बल से ही मात सब
बालक है बलवान ।
रुग्ण कृशांगी जब तुम्हीं
होंगे हम भी म्लान ।

जब तूँ ही परतन्त्र है
हम होंगे गृह - श्वान ।
तूँ "हौआ" डरपाएगी
निकलेंगे झट प्राण

अंधदरअ, छल, व्यसन, अड़
त्रास, अलस, भ्रम, छूत ।
अयश - भागिनी होयगी
जब तक है ये भूत

अरे होश कर मात अब
बना पुत्र मृगराज
हैं परवश में कीशवत्
बने हुए ये आज।

पूर्व काल में रूप का
तब कैसा आदर्श।
करके याद अभी उसे
होता है अति हर्ष।

सीता, सावित्री जहाँ
थी दमयन्ती दार।
कुन्ती, माद्री, उर्मिला
धन्य भारती नार।

पन्ना और अरुन्धती
गार्गी बीबी - चाँद।
सीता - शिरोमणि- पद्मिनी
गई आग में फाँद।

सिंह-नाद

झाँसी की रानी जहाँ
रण-चण्डी साक्षात् ।
दुर्गा, विदुला सी जहाँ
हाडी जग-विख्यात ।

धन्य अहिल्या, किरण थी
भारत माँ का मान ।
मर कर भी छोड़ी नहीं
निज भारतीय-आन ।

पर अब उन से लाभ क्या
गई बात जो बीत ।
हम तो वही सुनायेंगे
जो अब का संगीत ।

कमला सी कटिबद्ध हो
उठा देश का भार ।
कूद शीघ्र रण क्षेत्र मे
ले सारा परिवार ।

मातृ जाति तू वीर बन
यही जरूरत आज।
है गुलाम यह देश हा!
दुखिया अखिल समाज।

आ जल्दी माँ समर में
तेरे बिन सब अल्प।
तव अभाव से हीन हम
यक पल है सम कल्प।

जब पर्दा मे तू फँसी
भूली हो निज गेह।
आज़ादी के समर में
त्यागोगी कब नेह।

त्याग शीघ्र दे भीरुता
बन अब जननी शूर।
तुझे देखते ही उसी-
समय क्लीब हों क्रूर।

सिंह-नाद

अयि माता बन सिंहिनी
गरज शत्रु डर जाँय ।
खल-जम्बुक रण से भगें
देख होश उड़ जाँय ।

अगर नही तूँ सँभलती
देखेगी सुत घात ।
भारत माँ का भी तुम्हीं
कर दोगी रे घात ।

अन्तिम उद्बोधन यही
बन चण्डी रण-रक्त ।
पुत्र तुम्हारे भी अहो
बने भयंकर शक्त ।

मिल जायेगा तब तुझे
स्वतन्त्रता शुभ ध्येय ।
जिस कारण तूँ कलपती
बनी हुई अति हेय ।

नेता से

नेता गण, तुम ही, अहो
हो भारत के शान ।
ऊर्मि-मग्न इस देश को
दिया शीघ्र तृण-त्राण ।

गद् गद् है सब का हृदय
न्योछावर तव देन ।
यह सहिष्णुता यातना
है स्वतन्त्रता - देन ।

सिंह-नाद

भारत माँ बेड़ी बँधे
थी रोती दिन रात ।
आकर ढीला कर दिया
तुमने ही तो तात ।

त्याग अतुल वैभव, अहा,
बन निर्धन रण-धीर ।
आजादी कारण सतत
हो तुम अधिक अधीर ।

उच्च कोटि नेता तुम्हीं
हो आश्रय निष्पन्न ।
श्रेष्ठ अग्रसर के प्रति
है विचार सम्पन्न ।

क्षमा चाहता, अन्य को
देते कटु निर्देश ।
है कर्तव्य अब कथन का
देख दुखी अति देश ।

उच्च पदों को पहुँच भी
बढ़ा न अपना स्वार्थ।
सावधान हो अग्रसर
है अति अनुचित स्वार्थ।

हैं कतिपय वे अमल भी
जो सेवक निष्काम।
भारत माँ का हर रहे
भार, बना विधि वाम।

है प्रत्यक्ष अनुभूत यह
बढ़ा हुआ कुछ दोष।
काँगरेस से कुछ पतित
बढ़ा रहे निज कोष

यह अनुचित दुष्कर्म है
छोड़ शीघ्र दे शूर।
पक्षपात त्यागे बिना
ऐक्य भाव अति दूर।

नेता का है प्रमुख गुण
स्वार्थ-त्याग, उपकार ।
पर कुछ हैं क्यों बह रहे
दुर्गुण के धार ।

गांधी टोपी ही तथा
खादी नही प्रमाण ।
जब तक तेरा हृदय है
कलुषित, द्रोही-प्राण ।

त्याग वासना बन तपी
देख भयंकर ध्येय ।
आज़ादी-सैनिक बना
पी कर अनुचित पेय

वर्ज परस्पर शत्रुता
त्याग अवग्रह, लोभ ।
देख तुझे विकृत महा
होता हार्दिक क्षोभ ।

अय संचालक देश के
जाते क्यो हो गर्त ।
आश्वासन तुमने दिया
था क्या इस ही शर्त ।

हो मुखिया जन सर्व के
कर उनका कल्याण ।
मत निज कांधा मे फँसो
यह है नाश कृपाण ।

वेश स्वदेशी पहनना
पर तेरा आचार ।
है विदेश के साज से
सज्जित सब व्यवहार ।

कार, लवेन्दर, बिस्कुटे
सिगरट महँगा केक ।
डैनर के पथ से सदा
होटल रूप [illegible] ।

सिंह-नाद

राजनीति अगुआ सदा
होता नहीं विरक्त ।
माना मैंने भी यही
पर यह निर्धन रक्त ।

देश जहाँ है फी सदी
सत्तर भूखे लोग ।
निरवग्रह नेता बनें
बढ़े न फिर क्यों सोग ।

देख दर्द, दुख देश का
मिटा स्वार्थ अपवाद ।
मर मिटजा इस भूमि पर
करते रण-घन नाद ।

साहस, दम औ' नीति से
सेनप बन रे वीर ।
भीषणता से युक्त हों
अब तेरे खर-तीर ।

सिंह-नाद

निज नेतापन के लिए
मत कर कलह विवाद।
लक्ष्य बना अपना सफल
मिटे मातृ-अवसाद।

गर्व नही तुम मे जरा
हो, कर सेवा-देश।
पूज्य तभी तू होयगा
सह लेगा जब क्लेश।

नेता पर है सर्वदा
गुरु अतीव दायित्व।
खाला का घर यह नही
दिखा शौर्य रे नित्य।

अनुशासन उपदेश दे
खुद क्यो करता भंग।
तू अड़चन है यदि बना
होगा क्यो ना तंग।

सिंह-नाद

तेरे इस गृह-कलह पर
रिपु-गृह मे आनन्द ।
समय चूक कर रोयगा
सँभल मातृ-वर-नन्द ।

बस अन्तिम चेतावनी
त्याग कलुष सब त्वत्र ।
आजादी-रण के रथी
स्वतन्त्रता शुचि शस्त्र ।

——

कवि से

कवि तव वाणी आज क्यों
हुई अवध असूझ ।
देश काल प्रतिकूल बन
हो क्यों तुम बेबूझ ।

कवि भूषण सी लेखनी
हो कवि तेरी आज ।
बने अगर तूँ मैजिनी
हो स्वतन्त्रता आज ।

सिंह-नाद

कवि पृथिवी ने दिया था
वर प्रताप को होश।
बना जाति-गौरव उसे
बढ़ा दिया तद्रोप ।

शिवा-विजय में भी सदा
था तेरा कवि ! हाथ।
बन तूँ ही भूषण-भयद
करता शत्रु अनाथ ।

था पृथिवी चौहान का
महाशक्त कवि चन्द ।
जिसकी महिमा से हुआ
था चौहान अमन्द ।

चतुर बिहारी ने किया
जयसिंह का उद्धार ।
गोरे, सूदन, लाल सम
करो रक्त-संचार ।

सिंह-नाद

अनुभव कर अपमान का
बना लेखनी क्रुद्ध ।
शोले बन कर शब्द तव
करे शत्रु को रुद्ध ।

राष्ट्र हाय ! अब अवर बन
देख रहा तव ओर ।
विप्लव कर दे शीघ्र तूँ
काँप जाय क्षिति-छोर ।

तज रहस्य, छाया अधिक
अपना अब वर-राग ।
सुनते जिस के ही चलें
रोगी शैय्या - त्याग ।

प्रलय - प्रभंजन चल उठे
जलें ज्वाल अविराम ।
क्रान्ति-स्वर गूँजे सदा
बने [illegible] [illegible] ।

सिंह-नाद

उठ कवि आज बुला रही
स्वतन्त्रता वर मात।
बन प्रचण्ड रण-गान का
गायक अब हे तात।

जोश फूँक दे युवक मे
या कवि कर कविता न।
हा! विलोक माँ रो रही
गा अश्वासन-गान।

तव व्यापकता देख हम
हैं प्रसन्न कवि-राज।
किन्तु, दूर हो देश के
यही न उत्तम काज।

उदर-पूर्ति सम्भावना
आज देश से दूर।
मधुबाला, हाला लिए
तू क्यों मद से चूर।

सिंह-नाद

जगा आज कवि तू हमें
बन सेनप-कवि वीर ।
शब्द श्रवण से ही हमें
चुभ जायें स्वर-तीर ।

क्षमा करो कविवर मुझे
कहते कछु कटु बात ।
पराधीनता कर रही
विवश मार कर लात ।

———

देश द्रोही से

महापाप ! पापी यही
देश - द्रोह कुल-नाश ।
धिक, पामर लानत तुझे
रे, कुल - द्रोही बाँस ।

जरा शहीदी खून से
मिला दुष्ट ! निज द्रोह ।
स्वार्थ-मान हो भूल मत
यह घातक-व्यामोह

सिंह-नाद

अगर नहीं सँभला अरे
सुन ले दे कर कान।
देश-भक्ति-वडवाग्नि से
धधकेगा तव प्राण।

कीड़ों को छपटायगा
रे विद्रोही देश।
अधम नाम तेरा सुने
होगा सब को क्लेश।

होश ठिकाने कर जरा
है कुछ भी यदि शर्म।
करते पश्चाताप अब
बन वीरों का वर्म।

अरे विभीषण मूढ़, बन
मत जयचन्द कपूत।
मा का तू भी लाल है
बना आज क्यों भूत।

———

पूंजी पतियों से

धिक धिक है निष्ठुर तुझे
रंक-शत्रु ! होशियार।
दीन-आह से शीघ्र ही
होगा बण्टाधार ।

शुष्ण असुर तूँ ही अधम
रहा रक्त को सोख।
उजड़ा ही क्यों ना रहा
तेरी माँ का कोख ।

वैभव-शाली पद लिए
भूला वैभव - मूल ।
कहीं न नत तन दीन का
चुभ जाये बन शूल ।

सुधर गया है तूँ जरा
बढ़ा क़दम कुछ और
न्यायी बन कर न्याय से
कर ऊँचा निज ठौर ।

——

साधुओं से

ओ, असंख्य गैरिक व्रती

बन साधू रण-चण्ड।

भरा कमण्डल रक्त से

कर रिपु को शत खण्ड।

खर-त्रिशूल रख कर, अहा,

क्यों है कायर सिद्ध।

चण्ड, मुण्ड-खल शत्रु पर

चढ़ा बुभुक्षित-गिद्ध।

सिंह - नाद

नाक दबा निज मत अभी
दबा शत्रु का नाक ।
हर ! हर !! शिव !!! के नाद से
बिठा दुष्ट पर धाक

छल, प्रवंचना छोड़ अब
देख कलपती - मात ।
रिपुदल मे निज तेज से
मचा अभी उत्पात ।

जाग जपी, तज तप अभी
बन जा साध्र - शर ।
चिमटा ले कर हौद मे
बुला रही गगा - नर ।

—

किसानों से

कृषक, जाग, रे जाग अब
ले खुरपा कुदाल ।
शोषक शक्ति सँहार कर
स्रष्टा - सृष्टि सँभाल

दाने दाने के बिना
मरता क्यों बे मौत ।
जब तेरे ही स्वेद से
जग होता है यौत ।

सिंह-नाद

है रोटी जब छिन रही
जहाँ लगे तब दाँत ।
अरे देखता क्या कृषक
खींच दुष्ट का आँत ।

चिथड़े भी मिलते नहीं
हा ! कपास के मूल ।
कायरता अब छोड़ दे
बन शोषक-शठ-शूल ।

लक्षों के पति खल बने
और बना तू दास ।
कृषक, स्वत्व के योग्य हो
बन कर [illegible] नाश ।

अरे अकिञ्चन-आर्त अब
पर-प्रभुत्व को रोक ।
मन जायेगा [illegible]
[illegible]

सिंह-नाद

आँख धसी, हड्डी झुकी
झुर्री ले निज गात।
पेट पीन-प्रभु का भरे
खा किसान ! क्यों लात ?

सोना दे दारिद्र्य ले
सोना नहीं नसीब ।
अरे खून दे ले रहा
क्यों निज वपु मल पीब।

रक्त-नीर से सींच कर
देता जग को अन्न ।
मुट्ठी भर से तूँ वहीं
हाय ! नहीं सम्पन्न ।

धाराधर बहरा तथा
दे वर्षालय तोड ।
अम्बर, थल, पाताल को
रे किसान उठ फोड़ ।।

सिंह-नाद

भला कुरान, पुरान का
हो सकता अब जाप ?
क्या इन से मिट जायगा
देश बुभुक्षा - पाप ?

अगर धर्म प्यारा तुझे
सुन ले ठेकेदार ।
भूखों का भर पेट तू
है इस मे निस्तार ।

वरन धर्म यह नष्ट हो
रह जायेगा कर्म ।
अत: अभी धर्मात्मा
त्याग विडम्बन धर्म ।

आजादी - शुभ-मार्ग मे
मत रोड़ा मत रोक ।
वरना फिर कर पांगु वह
कर देगा रोक ।

पराधीन भारत से

रे भारत, निज पुत्र-गण
को दे बुद्धि विशाल
तेरी गोदी खेल कर
बनें न तेरा काल ।

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख हो
पारसी या क्रिस्तान ।
द्रोही यदि तेरा बने
पाये कहीं न स्थान ।

सिंह-नाद

क्लान्त गुलामी से हुआ
तो कर क्रान्ति कराल।
फिर उजडे सर मे तिरा
देश - सुभक्त - मराल ;

यदि स्वतन्त्र बनना तुझे
व्यष्टि एक कर डाल ।
ऐक्य बिना है हिन्द तव
नही गलेगी दाल ।

स्वार्थी गण यदि फूट का
बने अकारण बीज ।
तव खर विषमय-पयद से
तुरत जॉय वे भीज ।

फूट मतो से निकलती
तो इस का कर लोप ।
यदि गुलाम होना नही
तो क्यों रखता चोप ?

सिंह-नाद

भड़का दे ज्वाला अभी
मत रह अधिक गुलाम
सदियों से तन तव हुआ
विषम यातना - धाम ।

उछल कूद कर पुत्र तव
ले स्वतन्त्रता - मोद ।
फिर भारत तू मुदित हो
मुख चूमें ले गोद ।

अयश रात्रि का नाश कर
ला स्वतन्त्रता - भोर ।
शौर्य-सूर्य लख कर भगे
पराधीनता - चोर ।

देशी नरेशों से

प्रजापाल, पद तव अरे
व्यत्यय होता आज।
बन कालज्ञ सुधार अब
विकृत प्रजा समाज।

जैसे तूँ ने निज जनों
को है किया गुलाम।
क्या वैसे ही स्वयम् तूँ
इच्छा करना साम?

फर्कशता, लिप्सा अतुल,
देश - द्रोह, रिपु-संग।
ले इनको बढ़ता कहाँ
शिव के निकट अनंग ?

तभी पूर्ण - स्वाधीनता
प्राप्त करेगा देश।
स्वत्व मिटेगा जब यहाँ
द्रोही - देश - नरेश।

कंटक बन मत नृप खटक
स्वतन्त्रता - पथ बीच।
लुप्त प्राय होता सदा
कुत्सित, बाधक - नीच।

निर्धन कृषक कराहते
जब तेरे ही राज्य।
हा ! धनाढ्य धिक्कारते
समझ रंक को त्याज्य।

सिंह-नाद

साम्य-सचिव, शम्, स्नेह-नय,
यदि कर लें नृप सर्व ।
भारत माँ का क्यों नही
बढ़े सत्य, शुचि-गर्व ।

तृषा, द्रोह, अपकृति, जलन
फेंक लगा कर एड़ ।
पराधीनता - ऋक्ष से
कर हरि तूँ मुठ भेड़ ।

तन, मन, धन से जूझ जा
रे प्रताप - नृप - तुल्य ।
फिर गरीबनी माँ तुझे
कह दे रत्न - अमूल्य ।

———

जन साधारण से

सर्व प्रथम तज अपढ़ता
जन - साधारण क्रान्त ।
फिर समझोगे तुम सभी
स्वाधिकार, बन शान्त ।

मत लग अन्धा बन सदा
मत नेता सब मान ।
लाभ देख निज देश का
कर उन का सम्मान ।

सिंह-नाद

भला बुरा कुछ सोच तो
मत तन्द्रा में भूल ।
द्रोही पर विश्वास कर
गौरव पर मत फूल ।

पारतंत्र्य-पथ अगम ने
थका दिया क्यों शूर ।
खो बैठे तुम आज हो
जाति धर्म का नूर ।

रे समष्टि, अब जाग तूँ
सोई है अति काल ।
पराधीनता नाश कर
है यह तव यम-जाल ।

उथल पुथल जग मे करो
बनो क्रान्ति के दूत ।
जन साधारण जाग अब
भगा द्वेष, छल-भूत

सिंह-नाद

अरे चेत युग के बली
जाग ! बना क्यों सुस्त ।
देख सिसकियाँ भर रही
माँ, बन जल्दी चुस्त ।

पा प्रवीणता युद्ध मे
खेल मुण्ड ले गोद ।
देख भयंकर शत्रु दल
भगे तुरत चहुँ कोद ।

हिन्दू हम क्रिस्तान तूँ
औ' वह है इस्लाम ।
त्याग अभी यह भेद रे ।
तूँ है हाय ! गुलाम ।

एक बार मिल कर बढ़ो
तुम सब वीर महान् ।
थर-थर जग काँपे अहा
मचे युद्ध घमसान ।

सिंह-नाद

घृणा, द्वेष औ' द्रोह तज
बन भू-जननी-भक्त ।
स्वेद गिरे माँ का जहाँ
वहा वहाँ तू रक्त ।

अन्य दोष घातक महा
जो कुछ तुम मे आज ।
वर्ज उन्हें, माँ का बनो
रक्षक साम्य-सुराज ।

तेरे चरणों पर तुरत
शीश रखेगा देश ।
चतुर नीति-निष्णात् बन
मेट गुलामी वेष ।

उद्बोधन कवि दे रहा
हृत् दे हो गतिमान ।
रे सपूत गण, सरल मन,
बचा डूबता यान ।

नृशंस डिक्टेटरों से

पूर्वनाश की प्रतिक्रिया
के तुम हो यदि सार।
स्वार्थ-सिन्धु-सीकर तदपि
सयम से संहार।

रे नदीश, नवनद नही
देगे तुझको नार।
नरक कुण्ड से नर-नगर
रे खल, व्यर्थ न हार।

सिंह-नाद

निज स्वत्वों से दूर हो
क्यों पर-हित प्रति बक्र।
नीरज हो क्यों चाहता
बन जाना तूं तक्र?

विश्व सदा गौरव नहीं
देगा तुझको भ्रष्ट।
दारुण दुर्जनता तुझे
ही कर देगी नष्ट।

मानव के संहार का
बन मत कारण-क्रूर।
विस्फोटित हो अनल कण
तुझे करेंगे चूर।

निर्दोषों की तड़पती
गली घरों में लाश।
लायेगी प्रलयङ्करी
तेरा भयङ्कर ह्रास।

सिंह-नाद

रे पशु मानव, सम्भल अब
कहे न जग हा ! हन्त !
क्रान्ति वास्तविक विश्व मे
लाए ललित बसन्त ।

अन्य देशों से

विश्व वन्ध कर क्रान्तिमय
न्याय पक्ष कर पुष्ट ।
अड़ो कहीं जो सत्य पर
रुके , पद्धति - दुष्ट ।

ललचाई आँखों कभी
दुर्बल को मत देख ।
रक्त - नाश की प्रतिक्रिया
रोकेगी तव रेख ।

अबिसिनिया हालैण्ड औ'
फ्रान्सेत्यादि गुलाम।
तेरा न्यायी-पद अभी
हुआ न क्या बदनाम?

पशु-बल ले अन्याय मे
पशु मत बन रे देश।
अलखाखेटक तव कहीं
फाड़ न दे वर-वेष।

———

फुटकर

प्राञ्ज-परिचयल देश का
विकृत कर दी हाय !
है "काला-कूली" विरद्
बनकर ही कृश-काय।

आत्मिक-उन्नति भी नही
हो सकती सुन वीर।
जब तक तेरा सुस्थ दृढ़
नही आधार शरीर।

सिंह-नाद

अल्प-संख्यकों का सदा
ध्यान रखेगा देश।
पर उनके नेता छली
कहीं न दे दें क्लेश।

स्वार्थ सुन्दरी के सुखद
कन्त बने जयचन्द।
कहो भला पड़ना नहीं
भाग्य सुग्रह क्यों मन्द।

ली प्रताप से क्यो नहीं
अकबर ने मेवाड़।
विह्वल करती शत्रु को
जिसकी एक दहाड़।

सबसे पापी अधम है
भूखा और गुलाम।
पुण्यवान बनता जगत्
रख स्वतन्त्र शुभ नाम।

सिंह-नाद

मरने से अब देश-जन
हो जायें भयभीत।
छाती पर फिर दाल क्यों
दलें न रिपु-गण जीत।

होने से मतभेद या
छुट जाने से कार्य।
जाति, देश द्रोही-अधम
कभी न बनना आर्य!

पद-लोलुपता से बना
तू क्यों पूर्व 'अशोक'।
निस्पृह बन रे राम सा
देते जग आलोक।

भेद-नीति से शासकों
का है चलता चक्र।
शफरी शासित को बना
खाते हैं नृप-नक्र।

सिंह-नाद

राजनीति रहती सदा
मत-विवाद से दूर।
चन्दन-पावन रज कहाँ
कहाँ कुपथ का धूर।

भूल अल्प जब निम्न कर
खाता गाली लात।
आततायियों का भला
करें न क्यों सन्घात।

लक्ष-ईश तव वित्त ले
करते प्रचुर विलास।
हा! निर्धन हत्भाग्य तूँ
रहा खोदते घास।

गर्त्त-पूर्ति जापान वत्
करे हिन्द के वीर
ढह जाये क्यों ना भला
रिपु दृढ-तम प्राचीर।

सिंह-नाद

[illegible]जी चौहान ने
दिया शाह को छोड़।
क्रुद्ध-केहरी वह नयन
लेता क्यों ना फोड़।

देश-अनादर, राष्ट्र-वध
रिपु-संग, कुल-संहार।
करता जो भी स्वप्न में
है असंख्य धिक्कार।

जब दिवालिया औ विजित
है यह भारत देश।
दीवाली, विजया-दशी
का क्या कैतव वेष?

विधवा व्याकुल हैं जहां
करते द्रावक-नाद
अबे नाक रक्षक कहाँ
दबता तव अपवाद।

दूध दही की देश में
　　बहती सरि थी पुष्ट।
　　　　गोधन निपटाभाव से
　　　　　　आज नियति भी रुष्ट।

हिन्दी-तिय-बिन्दी मिटी
　　जाती स्वार्थी - हेत।
　　　　अधिप मुदित, गाँठे भरें
　　　　　　पड़े खाँड में रेत।

हिन्दुस्तानी आड़ में
　　हिन्दी का हो नाश।
　　　　कभी सह्य होगा नहीं
　　　　　　भाषा पर लख पाश।

देवनागरी-नाक पर
　　होता वज्र-निपात।
　　　　कोविद-कृष्ण कठोर बन
　　　　　　रोकें इन्द्र - आघात।

सिंह-नाद

छीछालेदर देश औ'
भाषा की है आज।
सुत रहें जो अग्रणी
तो हम को ही लाज।

देशभक्त पर "ऑक छी"
द्रोही पर कुर्बान।
तजकर मृदु-तम-दूध, खल
पीते हाला छान।

हरिजन से "हट दूर हो"
"स्वागत" साहब लाख।
जब पड़ौसि भूखे मरे
आप उड़ाएँ दाख।

देश हेतु पैसे नहीं
ले लाखों पर लाट।
रिपु को कल पर्यङ्क है
रङ्क न लँगड़ा खाट।

सिंह-नाद

मन्दिर, मसजिद के लिये
दान-पात्र हों पूर्ण।
कल करखाने कृपणता
का खाते है चूर्ण।

कविगण हैं निश्चिन्त हो
लखते शरद्-मयङ्क।
पर धोता कवि कौन है
भारत घृणित-कलङ्क?

दण्ड पेलते हैं जहाँ
साधू आध करोड़!
खण्डित हो क्यों ना भला
लोग परख को छोड़।

'बम भोले शिव' भङ्ग पी
मत कर निज शिव भङ्ग।
हर पौड़ी के भक्त सुन
नहा रक्त रिपु-अङ्ग।

सिंह-नाद

[illegible]तों के पड़ फेर में
माँ की सुनो न टेर।
कुरव देख धोती खुली
धन्य सन्त जी शेर ?

सुख कर है हाथी हुए
इतना दैशिक फिक्र।
हस्ति-लङ्क लचके समुद
भूखो का क्या ज़िक्र।

तोंद बढा कद्दू बने
मज़दूरों के माथ।
आप उड़ाये गुलछर्रे
रखें रखेली साथ।

बचना रे पोपो कहीं
छू लें नहीं अछूत।
भले अछूता जन्म दे
तेरे मानी - पूत

ब्रह्मचर्य - व्यभिचारिणी
का छोड़ा है सङ्ग।
हाला, बाला, घृत सह
करते रिपु को दङ्ग।

स्वार्थी टट्टू बदलते
गिरगिट के से रङ्ग।
सत्यवीर निर्भीक जन
लक्ष्य न करते भङ्ग।

मूर्ख चपाटों ने लिया
निज को सब कुछ जान।
मानो या मानो नहीं
मैं तेरा महमान।

सिर से पद तक हैं सजे
परदेशी ही वस्त्र।
बाबू को चुभती अहा!
बन खादी खर अस्त्र।

सिंहनाद

[illegible] कमर कम बेल्ट से
हुए अधिक जब क्षीण।
तरुणी-गण कृश-कमर तब
होगा निज मे लीन।

रे भारत जननी, जरा
रखतो साहस धीर।
छड़ी, घड़ी ले चल पड़े
है अब फैशन-वीर।

पौडर-गन्धक मुख-तुपक
मोदक-गोला मान।
वीर धड़ाधड़ कर रहे
मार पटाका तान।

जयति छबीले छैल जय
जय छिनार सिरताज।
हाय! कटीले-नयन से
मत मारो मृगराज।

पैण्ट, कोट, टोपा पहन
धीरे चल सुकुमार।
सदन बाह्य बचकर निकल
धूप न कर दे क्षार।

अहा! सलोनों के गले
जब बेली के हार।
बेडी का जकडन उन्हें
कब होगा स्वीकार?

क्रान्ति अग्र हो देश मे
स्वत्व सुरक्षित सर्व।
ग्रन्थिल उलझन दूर हों
रखकर क्रान्तिक-पर्व।

जहाँ याचना, दीनता
करें क्रान्ति का काम।
क्या वह भारत कायरों
का है बना न धाम?

सिं-ह-ना द

पाठीर्यन, प्रतिसदन में
गूँजे क्रान्ति-निनाद।
बाल, वृद्ध, युवक, वधू
त्यागे भीति-प्रमाद।

क्रांति, क्रांति बस क्रांति हो
क्रान्ति क्रान्त का कम्बु
पराधीनता - उदधि का
उड़े समस्त कुअम्बु।

डगमग अचल, पयोधि हो
काँप जाय आकाश।
परवशता तम नष्ट हो
आए नवल-प्रकाश।